तीन सुनहले संतरे

लेखन: आल्मा फ्लोर आडा, चित्र: रेग कार्टराइट

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

तीन सुनहले संतरे

लेखन: आल्मा फ्लोर आडा

चित्र: रेग कार्टराइट

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

ढ़लता सूरज सादी सफेदी से पुते घर पर उस वक्त सुनहरी आभा बिखेर रहा था, तब तीन भाई - सानतियागो, तोमास और मातिआस - अपने खेत से घर लौट रहे थे। दोनों बड़े भाई खाली हाथ झुलाते फुर्ती से आगे बढ़ रहे थे। जबकि सबसे छोटा मातिआस कंधे पर गेहूँ का गट्ठर उठाए, पसीने से लथपथ उनके पीछे आ रहा था।

"कुछ देर बैठो और सुस्ता लो," घर पहुँचते ही उनकी माँ सारा ने कहा। "मुझे तुम तीनों से कुछ कहना भी है।"

जब तीनों बैठ गए, सारा ने कहा, "देखो भई! मैं दादी बनने को तैयार हूँ। तुम तीनों अपने लिए बीवियाँ तलाशो और अपना-अपना घर बसाओ। मैं तो कहती हूँ कि तुम लोग फ़ौरन अपनी-अपनी पसन्द की लड़कियाँ ढूंढ़ना शुरू कर दो।"

तीनों भाइयों ने फ़िक्र से भर एक-दूसरे को देखा। वे जानते थे कि पहाड़ से समुद्र तक पसरी उनकी वादी में कुंवारी युवतियाँ थीं ही नहीं। अगले दिन काम के लिए खेत पर जाने के बाद भी वे इस समस्या पर सोचना बन्द ही नहीं कर सके।
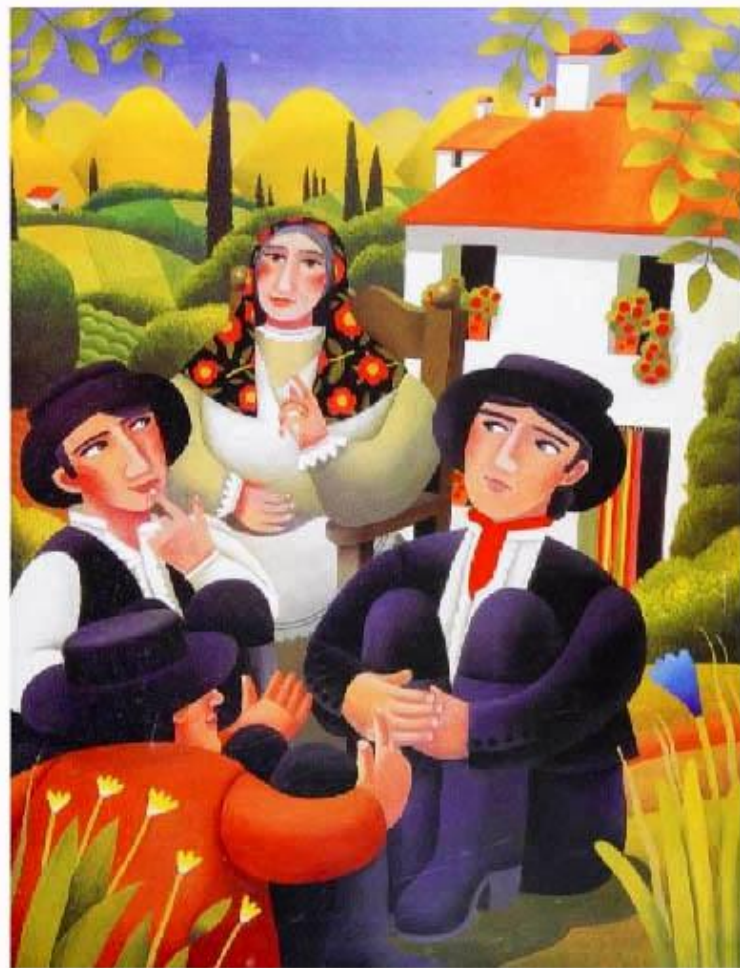
"अपन समुद्र के पास खड़ी चट्टान पर रहने वाली बूढ़ी अम्मा से क्यों नहीं पूछते," मातिआस ने सुझाया। उसके भाई बात मान गए। मातिआस अचरज में पड़ गया क्योंकि ऐसा बिरले ही होता था कि वे उसके कहे को तवज्जो दें।

तीनों भाई समुद्र के सामने वाली ऊँची चट्टान के संकरे पथ पर चढ़ने लगे। बूढ़ी अम्मा अपनी गुफ़ा के, जो उसका घर था, बाहर बैठी चरखा कात रही थी।

"यहाँ कैसे आना हुआ?" उसने अपना काम रोके बिना ही पूछा।

"हम ब्याह करना चाहते हैं, सो आपसे मशवरा करने आएं हैं," मातिआस ने बड़ी साफ़गोई और शाइस्तगी से जवाब दिया।

"तो बताओ कैसी बीवियाँ चाहिए, तुम तीनों को?" बूढ़ी अम्मा ने पुछा।

"मुझे एक बेहद खूबसूरत पत्नी चाहिए," सानतियागो ने फ़ौरन कहा।

"मुझे एक बेहद अमीर और सुन्दर बीवी चाहिए," तोमास ने पल भर भी रुके बिना जोड़ा।

"मुझे एक मेहरबान और खुशमिज़ाज स्त्री चाहिए, जिसे मैं खूब प्यार कर सकूँ," मातिआस ने कहा।

"तुम तीनों की इच्छाएं पूरी हो सकती हैं। पर बीवियाँ पाने के लिए तुम तीनों को साथ-साथ काम करना होगा। तुम लोग तीन दिन तक चलोगे," उसने एक बंजर पहाड़ी की ओर इशारा करते हुए कहा, जिसकी चोटी बादलों से ढ़की थी। "उस पहाड़ी के पार संतरों के बाग से घिरा एक किला है। बाग के सारे पेड़ों के संतरे हरे होंगे। पर एक पेड़ पर तुम्हें तीन सुनहले संतरे दिखेंगे, जो एक ही टहनी पर होंगे। टहनी या पेड़ को बिना चोट पहुँचाए तुम्हें उन तीन संतरों को उतारना है और उन्हें मेरे पास लाना है। याद रहे, मेरा कहा न किया तो ख़ैर नहीं!"

तीनों नौजवान जल्दी से घर लौटे ताकि अपने सफ़र की तैयारी कर सकें। अगले दिन सुबह-सुबह वे अपने झोलों में काजू-बादाम, खजूर और डबल-रोटी भर निकल पड़े।

वे पूरे दिन चलते रहे। जब रात पड़ी वे एक खलिहान में रुके और पुआल की ढेरियों पर सो गए। पर कुछ ही देर बाद सानतियागो दरवाज़े की दरार से आती चाँदनी से जाग गया। "मैं अपना समय इन दोनों भाइयों के साथ भला क्यों बरबाद कर रहा हूँ?" उसने खुद से पूछा। "जब हमें संतरे मिल जाएंगे तो शायद हम उनमें से सबसे अच्छे संतरे को पाने के लिए लड़ ही पड़ें। अगर मैं सबसे पहले संतरे के बाग में पहुँच गया तो मुझे जो पसन्द आएगा वह चुन लूंगा। बाकी दोनों के लिए मेरे भाई आपस में लड़ सकते हैं।"

सो सानतियागो उठा और बाकी बची रात और उसके अगले दिन भी लगातार चलता रहा। तीसरे दिन वह किले तक जा पहुँचा।

सूरज की किरणों ने संतरे के बाग को अभी गरमाना शुरू किया ही था। संतरे के सफ़ेद फूल सुबह की रोशनी में चमक रहे थे। उसने देखा कि सच में सारे के सारे संतरे हरे थे। पर जैसे ही सानतियागो निराश होने लगा, उसकी नज़र बरबस किले के दरवाज़े के पास वाले पेड़ की ओर खिंची। उस पेड़ की सबसे ऊँची टहनी पर तीन संतरे खांटी सोने से चमक रहे थे।

टहनी बहुत ऊँची थी। पर सानतियागो कब हार मानने वाला था। उसने पेड़ के तने को पकड़ कर झकझोरना शुरू किया, कि शायद वे नीचे टपक पड़ें। पर आश्चर्य! उसके हाथ पेड़ से चिपक कर रह गए। वह फंस चुका था।

उसी पल एक बुज़ुर्गवार कई पहरेदारों के साथ किले से निकला। उसकी जादू की छड़ी को छुआते ही सानतियागो आज़ाद हो गया। पर पहरेदारों ने तुरन्त उसे गिरफ्तार कर काल-कोठरी में पटक दिया।

अपनी अंधेरी काल-कोठरी से उसने बूढ़े व्यक्ति को कलपते सुना: "ओह मेरी प्यारी पत्नी, मेरी बेशकीमती बेटियाँ, तुम सब कब तक कैद रहोगी।"
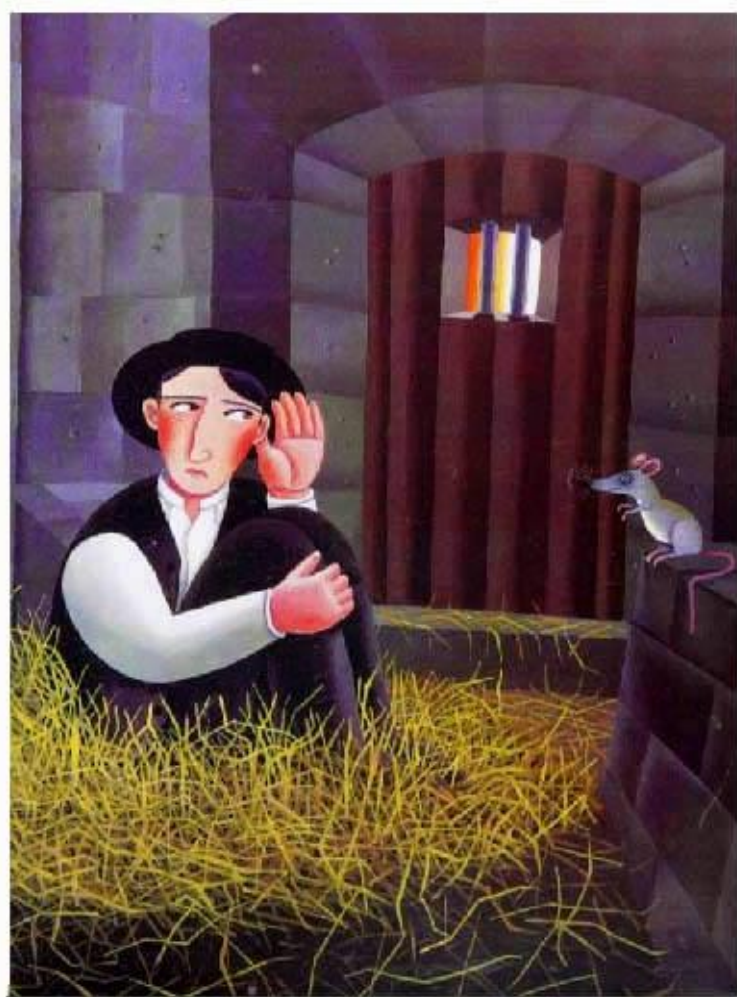
इधर जब तोमास और मातिआस उठे, उन्होंने देखा कि सानतियागो ने उनके साथ धोखा किया है। सो वे भी फ़ौरन निकल पड़े। शाम सूरज के ढ़लने के साथ वे पहाड़ के पास एक गुफ़ा तक पहुँचे, जहाँ वे रात बिता सकते थे। जैसे ही मातिआस की आँख लगी, तोमास चुपचाप उठा। "सानतियागो आगे निकल चुका है। मैं तेज़ चलूँ तो उसे पकड सकता हूँ," तोमास ने सोचा। "बेवकूफ़ मातिआस को मैं उसके हाल पर छोड़ देता हूँ। वह जो चाहे करे।"

तीसरे दिन की देर सुबह उसे किला दिखाई दिया। सानतियागो का कोई अता-पता नहीं था। वह संतरे के फूलों की खुशबू पर फ़िदा हो गया। पर उसने भी देखा कि सारे संतरे अभी हरे ही हैं। तब उसने ग़ौर किया कि किले के दरवाज़े के पास के पेड़ पर कुछ सुनहरा-सा चमक रहा है।

सुनहले संतरों को देख वह पगला गया। वह तेज़ी से पेड़ पर झपटा। पर यह क्या? उसका तो पूरा ही शरीर पेड़ से ऐसे चिपक गया है कि वह हिलडुल तक नहीं सकता था। कुछ ही पलों में एक बुज़ुर्गवार ने अपनी जादूई छड़ी छुआ कर उसे रिहा किया और पहरेदार उसे उसी काल-कोठरी में ले गए जहाँ उसका भाई कैद था।

इस बार दोनों भाइयों ने बूढ़े का विलाप सुना, "अरे मेरी प्यार पत्नी, मेरी बेशकीमती बेटियाँ, जिन्हें उस भयंकर जादूगर ने कैद कर रखा है..."

जब मातिआस की नींद खुली उसने देखा कि तोमास भी उसे अकेला छोड़ कर जा चुका है, वह दुखी हो गया। "मुझे जल्दी करनी चाहिए," उसने खुद से कहा। "समुद्र के पास बूढ़ी अम्मा ने हम तीनों को साथ रहने को कहा था।" तीसरे दिन की दोपहर तक मातिआस भी किले तक पहुँच गया। संतरे के फूलों ने उसका भी मन हर लिया। वह उनकी खुशबू के सहारे आगे बढ़ा। जल्द ही उसे भी वह पेड़ दिख गया जिस पर तीन सुनहले संतरे थे।

"मुझे जल्दी से संतरे तोड़ लेने चाहिए और तब अपने भाइयों को खोज लेना चाहिए।" वह ज़ोर से उछला और उसने वह टहनी पकड़ ली जिस पर तीन सुनहले संतरे लटके थे। पर जैसे ही टहनी टूटी पेड़ से एक चीख निकली। फ़ौरन वह बुज़ुर्गवार और पहरेदार उसके सामने हाज़िर हो गए।

"तुम्हारे पास संतरे हैं, मैं तुम्हें कैद नहीं कर सकता," बूढ़े ने कहा।

"मेरे भाई कहाँ हैं, मेहरबानी से मुझे बताइए," मातिआस ने विनती की।

"संतरे सारे दरवाज़े खोल देंगे," बुज़ुर्गवार ने जवाब दिया। "पर किले से डबल-रोटी और पानी के सिवा कुछ न उठाना और संतरों को कोई नुकसान न पहुँचाना, नहीं तो सारे दरवाज़े वापस बन्द हो जाएंगे।"

मतिआस किले की ओर दौड़ा जिसका दरवाज़े खुद-ब-खुद खुल गया। अन्दर किले की ऊँची दीवारों पर सुन्दर कशीदाकारी से बने चित्र टंगे थे। उनमें से एक ने मातिआस का मन मोह लिया। उसमें एक सुन्दर-सी युवती एक वादी में खड़ी थी जिसमें संतरों के बाग थे। वह उसे निहारने लगा। तब उसने अनिच्छा से अपने कदम आगे बढ़ाए ताकि भाइयों की तलाश जारी रख सके। आख़िरकार उसे वे दिख गए। काल-कोठरी का दरवाज़ा अपने आप खुल गया।

"तुम्हें अकेला छोड़ आने के लिए हमें माफ़ करना," सानतियागो और तोमास ने खिसिया कर कहा।

"अब उससे कोई फर्क नहीं पड़ता," मातिआस ने जवाब में कहा। "हमें ये संतरे जल्दी से समुद्र के पास वाली बूढ़ी अम्मा के पास ले जाने हैं।"

पर सानतियागो और तोमास किले की शानो-शौकत से ललचा गए। बड़ी अनिच्छा से वे मतिआस के पीछे चले। “हमें किसी भी चीज़ को हाथ नहीं लगाना है,” मतिआस ने चेतावनी दी। “सिर्फ़ सफ़र के लिए पानी और डबल-रोटी ही लेनी है।” पर दोनों बड़े भाइयों ने मतिआस की नज़र बचा कर सोने-चाँदी से बनी जो भी चीज़ें हाथ लगीं उनसे अपनी जेबें भर लीं।

मातिआस तेज़ी से रास्ते पर बढ़ा, खाने-पीने तक के लिए रुके बिना। हालांकि सूरज का ताप तेज़ था, संतरे कुम्हलाए नहीं, ताज़े और अच्छे दिखते रहे।

अभी वे किले से बहुत दूर पहुँचे भी नहीं थे कि दोनों बड़े भइयों ने अपनी-अपनी डबल-रोटी खा लीं और पूरा पानी पी डाला। अगले दो दिनों के बारे में सोचे बिना।

वह रात तीनों भाइयों ने गड़ेरिए की एक खाली कुटिया में बिताने की सोची। पर सानतियागो को नींद ही नहीं आई। वह इस बात से नाराज़ था कि सबसे छोटा मातिआस संतरे उठाए चल रहा था, जबकि वह नाकाम हो चुका था। सो आधी रात को वह उठा और मतिआस के हाथों में पकड़ी टहनी से सबसे बड़ा संतरा तोड़ा। तब अकेला आगे चल दिया।
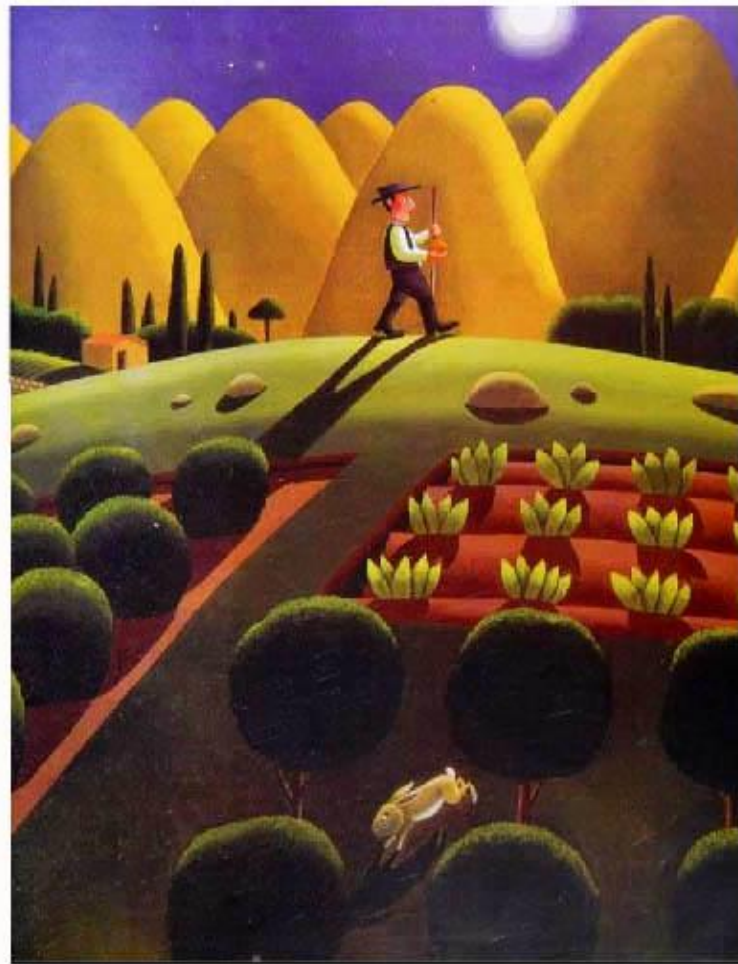
सानतियागो बाकी बची रात भर और अगली सुबह भी चलता रहा। जल्द ही सूरज की तपिश ने उसे परेशान और प्यास ने बेहाल कर दिया। उसने सोचा रसीले संतरे को खा लिया जाए। पर जैसे ही उसने संतरे को दो फांक किया, उसे सामने एक युवती खड़ी दिखी।

"मेहरबानी से मुझे खाने को थोड़ी डबल-रोटी दो," युवती ने कहा।

"मेरे पास तो नहीं है, मैं उसे खा चुका," सानतियागो और कहता भी क्या।

" तो फिर थोड़ा-सा पानी ही दे दो," उसने गुज़ारिश की।

"मैं सारा पानी भी पी चुका हूँ," खिसिया कर सानतियागो बोला।

"फिर तो मुझे अपने संतरे के पेड़ पर वापस लौटना पड़ेगा," उस सुन्दर युवती ने कहा। उसके गायब होते ही सानतियागो एक धूल के बवंडर में फंसा। अचानक वह किले के सामने था। वह हैरान-परेशान हो रहा था कि पहरेदारों ने उसे फिर से पकड़ काल-कोठरी में डाल दिया।

इधर भोर होते ही तोमास जगा। जब उसने देखा कि सानतियागो एक संतरे के साथ गायब हो चुका है, उसने अपने बड़े भाई के नक्शे-कदम पर चल देने में समझदारी समझी। उसने दो बचे हुए संतरों में से जो ज़्यादा बड़ा था वह उठाया और मातियास को सोता छोड़ अपनी राह चल पड़ा।

तोमास को भी पथरीले रास्ते और तपते सूरज से परेशानी हुई। उसने भी सोचा कि प्यास से मरने के बदले संतरे को खा लेना अच्छा है। वह उसे छील ही रहा था कि सामने एक युवती को देख चैंक गया। युवती बेशकीमती गहने पहने थी, जिससे यह साफ़ हो गया कि वह बड़ी अमीर थी।

"मेहरबानी से मुझे खाने के लिए कुछ डबल-रोटी दो," उसने तोमास से कहा।

"मेरे पास नहीं है, मैं उसे खा चुका हूँ," वह इसके सिवा और क्या कहता।

"तो फिर थोड़ा-सा पानी ही दे दो," उसने आग्रह किया।

"वह तो मैं पी चुका हूँ," तोमास ने दुखी हो कहा।

"फिर तो मुझे अपने संतरे और उसके पेड में लौट जाना होगा," युवती ने कहा। उसके गायब होते ही धूल का एक बवंडर उठा जिसने तामास को पल भर में किले तक पहुँचा दिया। पहरेदारों ने उसे भी कैद कर सानतियागो के साथ काल-कोठरी में डाल दिया।

जब मातियास उठा, उसने देखा कि एक ही संतरा बचा है और तोमास भी गायब है। उसे अपने भाइयों के कारनामों पर दुख हुआ। "वे कितने अधीर हैं," उसने सोचा। अपनी बचाई हुई डबल-रोटी और पानी के सहारे वह सूखी और तपती वादी को पार कर सका। शाम तक वह समुद्र के किनारे बूढ़ी अम्मा की गुफ़ा पहुँच गया।

"देख रही हूँ कि तुमने टहनी भी तोड़ ली, और तीनों संतरे अलग-अलग कर दिए," बुढ़िया ने कहा। "चूंकि तुमने मेरा कहा माना ही नहीं मैं तुम्हारी किस्मत से तुम्हें बचा नहीं सकती।" बूढ़ी अम्मा ने संतरे को काटा तो उसमें से एक कबूतर निकला।

"अरे! मेरी बीवी का क्या हुआ? मातिआस ने पूछा। "और मेरे भाइयों का?"

"सारा खेल तमाम नहीं हुआ है। अपने घर, अपने खेत को लौटो। अपनी खेतबारी जारी रखो। और हमेशा अपने दिल की सुनो।"

आगे और कुछ जोड़े बिना वह अपनी गुफ़ा में लौट गई।

मातिआस भारी मन से अपनी माँ को जो कुछ घटा, वह सब बताने घर लौटा। हालांकि सारा को अपने दो बड़े बेटों के गायब होने का दुख हुआ, वह खुश थी कि मातिआस लौट आया है।

हर सुबह जब मातिआस खेत के लिए निकल जाता सारा को दिलासा देने उसके पास एक कबूतर आता और उसके कंधों पर बैठ जाता। सारा दिन भर के अपने काम-काज निपटाती और वह उसका साथ देता। ना जाने क्यों उसके होने से सारा को यह लगता कि आगे सब ठीक हो जाएगा।

गर्मियाँ खत्म होने को थीं, कि एक सुबह मातिआस खेत से जल्दी वापस लौट आया। "मैंने सोचा है कि मैं एक बार फिर से किले जाऊँ और अपने भाइयों को खोजने की कोशिश करूं," उसने अपनी माँ से कहा। तब उसकी नज़र माँ के कंधे पर बैठे कबूतर पर पड़ी।

"माँ, यह कबूतर कहाँ से आया?" उसने पूछा।

"तुम जब खेत चले जाते हो यह हर दिन आता है और मेरा साथ देता है," सारा ने बताया। "मैं इसे ब्लाँकीता नाम से बुलाती हूँ।"

मतिआस ने अपना हाथ बढ़ाया तो कबूतर उस पर आ बैठा। मातिआस उसे हौले-हौले सहला रहा था कि उसे कबूतर की गर्दन में एक काँटा चुभा दिखा। उसने बड़ी सावधानी से उसे निकाल दिया। कबूतर तुरन्त ही यक खूबसूरत युवती में बदल गया।

"मेरा नाम ब्लाँकाफ्लोर है," उसने कहा। "हमें फ़ौरन ही, बिना समय गंवाए किले को जाना होगा। मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी।"

इस बार मातिआस को सफ़र छोटा लगा। रास्ते में ब्लाँकाफ्लोर ने मातिआस को अपनी राम कहानी सुनाई। बताया कि एक दुष्ट जादूगर ने उसे और उसकी दो बड़ी बहनों और माँ पर जादू-टोना कर दिया था। इसलिए क्योंकि उसके पिता ने किसी भी बेटी को ज़बरदस्ती उससे शादी करने का हुक्म देने से इन्कार कर दिया था।

"ब्याह किससे करना है, यह चुनने का हक़ हरेक औरत का है, क्या तुम भी ऐसा नहीं सोचते?" उसने मातिआस से पूछा। मातिआस यह सोचने लगा कि वह उसे खुद से शादी करने को मना सकेगा या नहीं।

जब वे संतरों के बाग में पहुँचे, सभी पेड़ों के सारे संतरे पक चुके थे। पर ब्लाँकाफ्लोर, मातिआस को सीधे उस पेड़ तक ले गई, जिसकी टहनी मातिआस ने तोड़ी थी। उसकी सबसे ऊपरी टहनी पर दो संतरे लटके थे।

मातिआस ने ब्लाँकाफ्लोर को ऊपर उठाया ताकि वह टहनी तक पहुँच सके। ब्लाँकाफ्लोर से बड़ी एहतियात से दोनों संतरे तोड़ लिए। जैसे ही उसने उन्हें नीचे रखा, वे उसकी दो बहनों में बदल गए। उसी पल खुशी से झूमता बुज़ुर्गवार भी किले से निकला। इधर पेड़ हिला और काँपा, तब सबकी आँखों के सामने एक महिला में बदल गया।

"माँ!" तीनों युवतियाँ चीखीं। उनके पिता ने अपनी बीवी और सभी बेटियों के दोनों गालों को चूमा।

"मेरी माँ और मेरे पिता से मिलो," ब्लाँकाफ्लोर ने मातिआस से कहा। "और ये मेरी बहनें हैं, ज़नाइदा और ज़ोराइदा।"

"मुझे अपने भाइयों को खोजना है," मातिआस ने ब्लाँकाफ्लोर से कहा।

"किले के सभी दरवाज़े अब खुले हैं," बुज़ुर्गवार ने किले के दरवाज़े की ओर इशारा करते कहा। सानतियागो और तोमास वहीं हाज़िर थे।

मतिआस और ब्लाँकाफ्लोर ने उनका अभिवादन किया। जब सानतियागो ने ज़नाइदा से पूछा कि क्या वह उससे ब्याह करेगी, उसने जवाब दिया, "एक बेवकूफ और घमंडी आदमी से ब्याह करने से तो अच्छा कि मैं अकेले जिऊँ।"

तब तोमास ने ज़ोराइदा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी। उसने जवाब दिया, "एक बेवकूफ और लालची आदमी से शादी करने से तो बेहतर है कि अपनी ज़िन्दगी अकेले ही जिऊँ।"

तो किले में उस दिन सिर्फ एक ही शादी हुई। उसके बाद मातिआस और ब्लाँकाफ्लोर समुद्र किनारे उस छोटे से सफ़ेद घर में लौटे। उन्होंने सारी खिड़कियों के सामने और सारा के दिल को जिरेनियम के फूलों से भर दिया।

सानतियागो और तोमास का क्या हश्र हुआ यह कोई नहीं जानता। पर मुझे जब भी पता चलेगा, मैं ज़रूर बताऊँगी।

जैसा हिस्पानी भाषा की कहावत है:

कहानी ने रुपहले रास्ते से प्रवेश किया

और सुनहले से प्रस्थान

कहानी लगी होगी उतनी ही अच्छी जितनी लगी थी मुझे

तब जब दादी ने सुनाई थी मुझे।

लेखिका की कलम से

ब्लाँकाफ्लोर की कहानी, जो उन तीन बहनों में सबसे छोटी थी, जिन पर जादू-टोना कर संतरों में कैद कर दिया गया था, समय के साथ कई रूप धर चुकी है।

कुछ स्वरूपों में उसे कैद करने वाला खुद उसका पिता ही था। क्योंकि उसने पिता के हुक्म की उदूली की थी। पर इन स्वरूपों में एक बात जो समान है, वह है ब्लाँफ्लोर का कबूतर में बदल जाना, और उसके हाथ में एक सूई का चुभा होना। यह सूई ही उस जादू को पलटने का उपाय है। मेरी कहानी में यह सूई एक कांटे के रूप में कबूतर के गले में चुभी मिलती है, जिसे मातिआस निकालता है। साथ ही इसमें पिता उत्पीड़ित करने वाला नहीं बल्की खुद भी एक पीड़ित इन्सान है।

दक्षिणी स्पेन में संतरे अरब लोग लाए थे, जहाँ 711 से 1492 तक उनके राज्य थे। संतरों के बागान उस इलाके के पसन्दीदा फल-बागान बने क्योंकि उनके सुगंधित फूलों के साथ रसीले फल भी थे। वैलेन्सिया का इलाका खास तौर से अपने संतरों के बागानों के लिए मशहूर है, और वहाँ का सबसे बड़ा निर्यात भी संतरा ही है।

-ए.एफ.ए.